अमेरिका-भारत संबंधों की एक प्रेम गाथा

तीन साल पहले पत्रकार, गैर-कथा साहित्य लेखक और गज़लकार नीलेश मिश्र ने अपहरणों और सत्ता के गलियारों के कुचक्रों को दरकिनार कर कुछ ज़्यादा महत्वपूर्ण विषय पर अपनी कलम आजमाई: प्रेम- हां, अभागे प्रेमियों की कथा।

इसका नतीज़ा रहा अक्टूबर 2006 में पठनीय, रोचक उपन्यास ''वन्स अपॉन ए टाइम ज़ोन ...'' का प्रकाशन। यह एक भारतीय कॉल सेंटर कर्मचारी और उसके प्रेम में गिरफ़्तार एक अमेरिकी लड़की की कहानी है। नायक को अमेरिकी होने का अभिनय करना पड़ता है, बनावटी उच्चारण और नए नाम के साथ, ताकि वह अमेरिकी ग्राहकों से आने वाली फोन कॉल का जवाब दे सके। उससे फोन पर बात करने वाली एक लड़की उससे प्रेम करने लगती है, लेकिन लड़की भी अपने बारे में पूरा सच नहीं बता रही है।

हम इस आधुनिक, आपस में जुड़ी दुनिया के बारे में बहुत कुछ सुविचारित कल्पनाएं कर सकते हैं, जहां असल में संपर्क बहुत आसानी से टूट जाते हैं। इसकी तुलना शायद भारत-अमेरिकी संबंधों से भी हो सकती है जहां 60 सालों से दोनों देश एक-दूसरे को समझने का प्रयास कर रहे हैं, जिन्हें हमेशा दोस्त बनना था, लेकिन दशकों तक अभागे रहे।

खैर, इस सब को भूलकर हम ''वन्स अपॉन ....'' की बात करें। पुस्तक मज़ेदार है, कहीं-कहीं तो पाठक हंसी से लोटपोट हो जाता है लेकिन चरित्रों से उसकी सहानुभूति बराबर बनी रहती है। आपको लगेगा कि आपके दिमाग में फ़िल्म चल रही है। लेखक को मुंबई फ़िल्म उद्योग से मिल रहे संकेत कामयाबी की मंज़िल तक पहुंचे तो आप जल्द ही उपन्यास पर बनी फ़िल्म भी देखना चाहेंगे।

अब तक '' वन्स अपॉन ए टाइम ज़ोन...'' की लगभग 8,000 प्रतियां बिक चुकी हैं जो भारत के अंग्रेजी पाठक वर्ग को देखते हुए काफी उत्साहजनक है। बढ़िया खबर यह है कि दिसंबर में हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया इसका नया संस्करण बाज़ार में ला रहा है। आवरण पृष्ठ पर मौजूद साड़ी पहने स्टेच्यू ऑफ़ लिबर्टी की कलाकृति इसमें नदारद हो सकती है। यह अच्छी बात नहीं है।

मिश्रा का पत्रकार के रूप में प्रशिक्षण साफ दिखता है। वह जानते हैं कि किसी कथा को कैसे कहा जाए और कथा का विस्तार यह सोचने पर मजबूर करता है कि वह अपनी ज़िंदगी के हर संवाद को लिख लेते हैं और गुजर रहे अजनबियों के चेहरों के भावों को नोट कर लेते हैं। उपन्यास लिखने से पहले वह तीन सप्ताह के लिए न्यू यॉर्क गए थे। वहां उन्होंने बहुत कुछ देखा और हर चीज़ को सही समझा। बस अमेरिका का वीज़ा हासिल करने की प्रक्रिया हजम नहीं हुई- मैं स्पष्ट कर दूं कि इस तरह किसी को वीज़ा नहीं मिल सकता। मुझे इससे ज़्यादा नहीं बताना चाहिए क्योंकि ऐसा करने पर मिश्रा द्वारा बुनी गई उपन्यास की कथा का मज़ा खराब हो जाएगा।

नीलेश मिश्रा कहते हैं कि उपन्यास लिखना शुरू करते हुए उन्हें अपने पत्रकारिता प्रशिक्षण के कारण कुछ परेशानी हुई, ''मुझे तो चुस्त, अनुशासित गद्य लिखने की आदत थी। संपादक नंदिता अग्रवाल ने पहले तीन अध्याय पढ़े तो बोलीं- सब कुछ बहुत तेज़ी से हो रहा है, जरा आराम-आराम से घटनाक्रम को बढ़ने दीजिए!''

'' वन्स अपॉन...'' लिखते हुए ही उन्होंने जाना कि ''कथा साहित्य लेखन का सबसे कठिन रूप है...। शुरू में तो खैर मैं बहुत आश्वस्त था- शायद अतिआत्मविश्वास से भरा भी- लेकिन करीब नौ अध्याय लिख चुकने के बाद मैंने खुद से पूछा: भाई, कहानी कहां है? अभी तक तो घटनाक्रम का अता-पता ही नहीं है। तो फिर नए सिरे से लिखना शुरू किया।''

मिश्रा बताते हैं कि पहलेपहल उनके मन में उपन्यास लिखने की बात 2002 में अपनी पहली न्यू यॉर्क यात्रा के दौरान आई, ''लेकिन तब मैं एकदम अलग ही तरह की चीज़ लिखना चाह रहा था। फिर उसके अगले साल नोएडा में अपने घर जाते समय एक कॉल सेंटर के सामने से गुजरते हुए मन में विचार कौंधा कि काम के लिए एक अलग पहचान के साथ जीना कैसा होता होगा, और इस नकली पहचान से कोई प्रेम करने लगे तो क्या हो? बस यहीं से उपन्यास का अंकुर फूटा।''

उन्होंने काफी शोध किया और कॉल सेंटर में काम करने वाले मित्रों से काफी पूछताछ की। वह तो यहां तक कहते हैं, ''मैं आंखोंदेखी सच्चाई जानने के लिए कुछ समय किसी कॉल सेंटर में काम करना चाहता था लेकिन मेरी छुट्टियां खत्म हो चुकी थीं।''

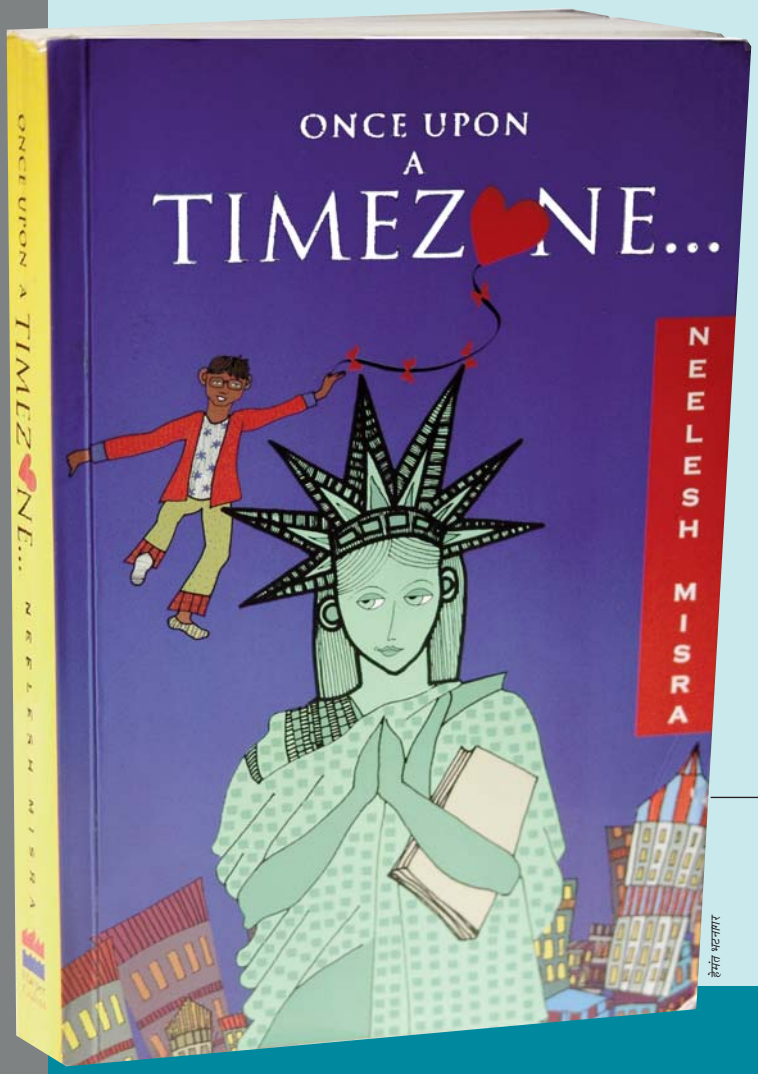

हेमंत भटनागर

वन्स अपॉन ए टाइम ज़ोन
नीलेश मिश्रा
पेपरबैक, 247 पृष्ठ
हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया, नई दिल्ली